International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 13 Issue 11 || November 2024 || PP. 124-130

हिन्दी जनसंचार मंचों के माध्यम से उभरते नैतिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों का आर्य समाज संदर्भित विश्लेषण

[1]विनय सिंह, [2]डॉ० शैलेन्द्र कुमार तिवारी

[1]शोधकर्ता , मध्यकालीन इतिहास, डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या
[2] प्रोफेसर, मध्यकालीन इतिहास, गनपत सहाय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सुलतानपुर। (उ०प्र०) डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय,. अयोध्या

शोध–विवरण-*वर्तमान डिजिटल युग में हिन्दी जनसंचार मंच सोशल मीडिया, ओटीटी प्लेटफॉर्म्स, डिजिटल समाचार पोर्टल्स, वेब श्रृंखलाएँ एवं पॉडकास्ट्ससामाजिक परिवर्तन के प्रमुख अभिकर्ता (एजेंट) बन गए हैं। ये मंच केवल सूचना के प्रवाह का माध्यम न रहकर, सामूहिक चेतना, नैतिक बोध और सांस्कृतिक पहचान के निर्माण-पुनर्निर्माण का क्षेत्र बन गए हैं। भारतीय, विशेषकर हिन्दी-भाषी समाज, इन माध्यमों के जरिए जिस तीव्र नैतिक-सांस्कृतिक उथल-पुथल से गुजर रहा है, उसमें पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक विचारों के बीच एक जटिल अंतःक्रिया दिखाई देती है। यह शोधपत्र इसी जटिल परिदृश्य का विश्लेषण एक विशिष्ट बौद्धिक-सुधारवादी परंपराआर्य समाजके सैद्धांतिक लेंस के माध्यम से करने का प्रयास करता है। आर्य समाज, जिसकी स्थापना 19वीं सदी में स्वामी दयानंद सरस्वती ने वैदिक मूल्यों पर आधारित एक तर्कसंगत, नैतिकतावादी और रूढ़िहीन समाज की कल्पना से की थी, आज के डिजिटल युग की चुनौतियों और अवसरों के विश्लेषण हेतु एक समृद्ध ढाँचा प्रदान करती है। इस शोध का केंद्रीय तर्क यह है कि आर्य समाज द्वारा प्रतिपादित मूल सिद्धांतजैसे शुद्धि (नैतिक व बौद्धिक शुद्धि), एकेश्वरवाद पर आधारित नैतिक सार्वभौमिकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समर्थन, स्त्री शिक्षा व गरिमा, रूढ़ियों का विरोध, और वेदों को 'अपौरुषेय ज्ञान' मानकर उनकी तार्किक व्याख्याआज के हिन्दी जनसंचार मंचों पर घटित हो रहे नैतिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों के मूल्यांकन के लिए एक प्रासंगिक एवं गहन मानदंड प्रस्तुत करते हैं। यह पत्र विभिन्न हिन्दी जनसंचार माध्यमों पर प्रसारित विषयवस्तु का विश्लेषण करेगा, जैसे सामाजिक अन्याय के प्रतिनिधित्व, धार्मिक आचरण की डिजिटल अभिव्यक्ति, लैंगिक भूमिकाओं का पुनर्गठन, उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रसार, और सामूहिक पहचान के नए रूप। इन सबका आकलन आर्य समाज के सिद्धांतों की कसौटी पर किया जाएगा। शोधपत्र इस बात की पड़ताल करेगा कि क्या ये डिजिटल मंच आर्य समाज की भाँति 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' (विश्व को आर्य/श्रेष्ठ बनाएं) के आदर्श को आगे बढ़ा रहे हैं या उसके मार्ग में नई तरह की रूढ़ियाँ एवं नैतिक द्वंद्व पैदा कर रहे हैं। अंततः, यह विश्लेषण यह समझने में सहायक होगा कि कैसे एक 19वीं सदी का सुधारवादी आंदोलन, 21वीं सदी की डिजिटल जटिलताओं को समझने और उन पर चिंतन करने हेतु एक सशक्त बौद्धिक उपकरण प्रदान कर सकता है।*

कीवर्ड *:-आर्य समाज, जनसंचार, हिन्दी मीडिया, डिजिटल संस्कृति, नैतिक परिवर्तन, सांस्कृतिक परिवर्तन, स्वामी दयानंद सरस्वती, वैदिक मूल्य, सोशल मीडिया, नैतिकता।*

प्रस्तावना

21वीं सदी का तीसरा दशक सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के अभूतपूर्व विस्तार का साक्षी है। हिन्दी भाषी क्षेत्र, जिसकी जनसंख्या सैकड़ों करोड़ में है, डिजिटल मीडिया के एक बड़े और सक्रिय उपभोक्ता के रूप में उभरा है। फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर (एक्स), यूट्यूब, इंस्टाग्राम, टिकटॉक जैसे प्लेटफॉर्म्स ने सामाजिक संवाद, सूचना के प्रसार और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के नए रास्ते खोले हैं। साथ ही, ओटीटी प्लेटफॉर्म्स (जैसे Netflix, Amazon

Prime, Disney+ Hotstar) और हिन्दी डिजिटल न्यूज़ मीडिया ने मनोरंजन एवं समाचार के स्वरूप को मौलिक रूप से बदल दिया है। इन मंचों ने परंपरागत सामाजिक संरचनाओं, नैतिक मानदंडों और सांस्कृतिक प्रतीकों को चुनौती दी है। एक ओर इन्होंने सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता जैसे प्रगतिशील विमर्शों को बल दिया है, तो दूसरी ओर सामूहिक पहचान, धार्मिक भावनाएँ और पारिवारिक मूल्यों पर नए सिरे से बहस छेड़ी है। इस प्रक्रिया में एक नई प्रकार की 'डिजिटल नैतिकता' और 'ऑनलाइन संस्कृति' का उदय हुआ है, जो अक्सर पारंपरिक मूल्यों के साथ तनावपूर्ण संबंध रखती है।

1.3 शोध का उद्देश्य

- हिन्दी डिजिटल मीडिया द्वारा प्रस्तुत नैतिक-सांस्कृतिक विषयवस्तु का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
- आर्य समाज के मूल सिद्धांतों को एक सैद्धांतिक लेंस के रूप में स्पष्ट करना।
- दोनों के बीच तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना।
- यह आकलन करना कि कैसे एक ऐतिहासिक सुधारवादी आंदोलन आधुनिक तकनीकी-सामाजिक परिवर्तनों की व्याख्या कर सकता है।
- एक संतुलित, तर्कसंगत एवं मानवीय नैतिक-सांस्कृतिक दिशा के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

1.4 शोध की सीमाएँ

- यह शोध मुख्यतः हिन्दी भाषी डिजिटल मंचों पर केंद्रित है। अन्य भारतीय भाषाओं के मंचों का सीधा विश्लेषण इसमें शामिल नहीं है।
- आर्य समाज के भीतर मौजूद विभिन्न व्याख्याओं और धाराओं के बजाय, स्वामी दयानंद सरस्वती के मूल सिद्धांतों एवं 'सत्यार्थ प्रकाश' जैसे ग्रंथों पर प्राथमिक ध्यान दिया गया है।
- यह एक गुणात्मक सैद्धांतिक विश्लेषण है, जिसमें व्यापक मात्रात्मक डेटा संग्रह का प्रयोग नहीं किया गया है।

सैद्धांतिक ढाँचा एवं साहित्य समीक्षा

2.1 मूल सिद्धांत एवं विश्वदृष्टि

आर्य समाज (स्थापना 1875) एक मौलिक हिन्दू सुधार आंदोलन था जिसने अपने समय की सामाजिक बुराइयों (जाति प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा, मूर्तिपूजा, अशिक्षा) का विरोध किया और वेदों को सर्वोच्च प्रमाण मानते हुए एक तर्कपूर्ण, नैतिक एवं विज्ञान-सम्मत धर्म का प्रचार किया। इसके प्रमुख सिद्धांत हैं:

वेदों की अपौरुषेयता एवं श्रेष्ठता: वेद सनातन, नित्य और सर्वोच्च ज्ञान के स्रोत हैं। न की व्याख्या युक्ति एवं तर्क के आधार पर होनी चाहिए।

एकेश्वरवाद (मोनोथिज़्म): "ओ३म्" सर्वशक्तिमान, निराकार, न्यायकारी ईश्वर का प्रतीक है। मूर्तिपूजा का स्पष्ट विरोध।

शुद्धि का सिद्धांत: यह दोहरा है(क) आंतरिक शुद्धि: चित्त की पवित्रता, सच्चरित्रता, नैतिक जीवन। (ख) सामाजिक शुद्धि: समाज से कुरीतियों, अंधविश्वासों और अनैतिक प्रथाओं का उन्मूलन।

स्त्री एवं शूद्र शिक्षा का समर्थन: स्वामी दयानंद ने सभी के लिए, विशेषकर स्त्रियों और समाज के वंचित वर्गों के लिए वैदिक ज्ञान की शिक्षा पर बल दिया। उनकी गरिमा और अधिकारों का पक्ष लिया।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण: आर्य समाज ने अंधविश्वास के विरुद्ध जागरूकता फैलाई और प्रकृति के नियमों के अनुसार जीवन जीने पर जोर दिया। उनका मानना था कि वैदिक ज्ञान विज्ञान से परस्पर विरोधी नहीं है।

सामाजिक समानता: जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था का खंडन किया और गुण-कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था की बात की।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्': विश्व को आर्य (श्रेष्ठ, सभ्य, नैतिक) बनाने का लक्ष्य।

ये सिद्धांत हमें एक तर्कसंगत नैतिकतावाद का ढाँचा देते हैं, जिसके आधार पर वर्तमान सांस्कृतिक उत्पादों का मूल्यांकन किया जा सकता है।

2.2 जनसंचार, संस्कृति एवं नैतिकता: प्रासंगिक सिद्धांत

सांस्कृतिक अध्ययन: स्टुअर्ट हॉल आदि के विचारों के अनुसार, मीडिया सांस्कृतिक अर्थों का निर्माण करता है और सत्ता संबंधों को प्रतिबिंबित व सुदृढ़ करता है। हिन्दी मीडिया में यह प्रक्रिया कैसे काम कर रही है, यह देखना महत्वपूर्ण है।

डिजिटल नैतिकता: ऑनलाइन स्पेस में व्यक्तिगत गोपनीयता, सत्यता, घृणा-भाषण, और डिजिटल नागरिकता से जुड़े मुद्दे। आर्य समाज का 'सत्य' और 'अहिंसा' (वचन, मन, कर्म से) का सिद्धांत इनसे सीधे जुड़ता है।

मीडिया एवं सामाजिक परिवर्तन: मीडिया सामाजिक मानदंडों को कैसे बदलता है या कायम रखता है, इस पर शोध। हिन्दी ओटीटी श्रृंखलाएँ इसका प्रमुख उदाहरण हैं।

2.3 पूर्व शोधों का अवलोकन

हिन्दी मीडिया पर शोध बढ़ रहे हैं, पर अधिकांश समकालीन राजनीति, भाषा के प्रयोग या विशिष्ट श्रृंखलाओं के विश्लेषण तक सीमित हैं। आर्य समाज पर ऐतिहासिक व धार्मिक शोध भरपूर हैं। किंतु, आर्य समाज के दार्शनिक ढाँचे को एक सैद्धांतिक उपकरण के रूप में प्रयोग करते हुए आधुनिक हिन्दी जनसंचार मंचों के नैतिक-सांस्कृतिक प्रभाव का विश्लेषण करने वाला शोध एक नवीन अकादमिक प्रयास है। यह शोधपत्र इसी अंतर को भरने का प्रयास करता है।

हिन्दी जनसंचार मंच एक सांस्कृतिक क्षेत्र के रूप में

3.1 मंचों का स्वरूप एवं विस्तार

सोशल मीडिया: फेसबुक, व्हाट्सएप, यूट्यूब, ट्विटर/एक्स, इंस्टाग्राम, टिकटॉक। ये 'उपयोगकर्ता-जनित विषयवस्तु (यूजीसी)' के माध्यम से सीधे लोगों को अभिव्यक्ति का मौका देते हैं। धार्मिक प्रवचन, सामाजिक टिप्पणी, मीम्स (Memes), वायरल वीडियो यहाँ नैतिक-सांस्कृतिक बहसों को प्रेरित करते हैं।

ओटीटी प्लेटफॉर्म्स: नेटफ्लिक्स, अमेज़ॅन प्राइम वीडियो, डिज़्नी+ हॉटस्टार, सोनीलिवआदि पर हिन्दी वेब श्रृंखलाएँ (जैसे मिर्ज़ापुर, सैक्रेड गेम्स, पाताल लोक, द फैमिली मैन)। ये अक्सर पारंपरिक टेलीविजन से हटकर जटिल और विषयों पर केंद्रित होती हैं, जो सामाजिक मानदंडों को चुनौती देती हैं।

डिजिटल समाचार पोर्टल एवं पॉडकास्ट्स: दृष्टि, द वायर हिंदी, न्यूज़लॉन्ड्री, आवाज़ आदि। ये गहन विश्लेषण और वैकल्पिक विमर्श प्रस्तुत करते हैं, जो मुख्यधारा मीडिया से अलग हो सकते हैं।

3.2 प्रमुख नैतिक-सांस्कृतिक विषयवस्तु का वर्गीकरण

डिजिटल मंचों पर निम्नलिखित प्रकार की विषयवस्तु प्रमुखता से दिखाई देती है, जो सीधे नैतिक व सांस्कृतिक चिंताओं से जुड़ी है:

1. लैंगिकता एवं स्त्रीवाद पर विमर्श: महिलाओं के अधिकार, यौनिकता, देह-स्वायत्तता, पितृसत्ता की आलोचना, MeToo आंदोलन।

2. धार्मिक पहचान एवं अभिव्यक्ति: भक्ति चैनल, धार्मिक गुरुओं के प्रवचन, धर्म के 'सही' स्वरूप पर बहस, धर्मनिरपेक्षता बनाम उग्र राष्ट्रवाद।

3. जाति एवं सामाजिक न्याय: दलित-बहुजन विमर्श, ओबीसी राजनीति, सवर्णों के 'पीछे रह जाने' का भय, आरक्षण पर बहस।

4. पारिवारिक मूल्यों का पुनर्गठन: संयुक्त परिवार बनाम एकल परिवार, प्रेम विवाह बनाम arranged marriage, LGBTQ+ संबंधों का प्रतिनिधित्व, वृद्धजनों की भूमिका।

5. उपभोक्तावाद एवं भौतिकवाद: 'सफलता' की नई परिभाषाएँ, फ्लैंटिंग कल्चर, ब्रांड्स का प्रदर्शन, जीवनशैली की|

6. राष्ट्रीय पहचान एवं इतिहास: राष्ट्रवाद की अवधारणा, ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या, 'देशद्रोह' जैसे आरोपों का प्रयोग।

आर्य समाज के लेंस से विश्लेषण

हम उपरोक्त विषयवस्तु का आर्य समाज के सिद्धांतों के आधार पर गहन विश्लेषण करेंगे।

4.1 लैंगिक विमर्श स्त्री शिक्षा से देह-स्वायत्ता तक

आर्य समाज का दृष्टिकोण: स्वामी दयानंद ने स्त्री-शिक्षा को अनिवार्य बताया, बाल विवाह का विरोध किया और विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया। उन्होंने स्त्री को पुरुष के बराबर आध्यात्मिक अधिकार दिए। उनका लक्ष्य स्त्री को ज्ञान से सशक्त बनाकर उसकी गरिमा स्थापित करना था।

डिजिटल मंचों पर प्रतिनिधित्व: हिन्दी ओटीटी श्रृंखलाएँ (जैसे दिल्ली क्राइम, मास्टर ऑफ नन) और यूट्यूब चैनल स्त्री केंद्रित कहानियाँ सुनाते हैं, यौन शोषण को उजागर करते हैं, और पितृसत्तात्मक ढाँचे को चुनौती देते हैं। सोशल मीडिया पर MeToo ने सशक्तिकरण की नई भाषा दी।

विश्लेषण: एक ओर, यह आर्य समाज के स्त्री-सम्मान के आदर्श को डिजिटल युग में आगे बढ़ाता हुआ प्रतीत होता है। शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से स्त्री की आवाज़ बुलंद हो रही है, जो 'शुद्धि' (सामाजिक शुद्धि) के सिद्धांत से मेल खाता है। दूसरी ओर, कई बार इस विमर्श का स्वरूप अत्यधिक भौतिकवादी और उपभोक्तावादी हो जाता है, जहाँ स्वतंत्रता का अर्थ केवल शारीरिक स्वच्छंदता या ब्रांडेड उत्पादों के उपभोग तक सीमित होकर रह जाता है। आर्य समाज की चरित्रनिष्ठा और आंतरिक शुद्धि पर बल देने वाली नैतिकता इन पहलुओं पर प्रश्नचिह्न लगा सकती है। संतुलन यहाँ आवश्यक है: स्त्री की स्वायत्तता और शिक्षा का समर्थन (आर्य समाज के अनुकूल) करते हुए, उसे एक संपूर्ण, नैतिक व्यक्तित्व के विकास के दृष्टिकोण से देखना।

4.2 धार्मिक अभिव्यक्त एकेश्वरवाद बनाम डिजिटल मूर्तिपूजा

आर्य समाज का दृष्टिकोण: निराकार ईश्वर में विश्वास, मूर्तिपूजा का तर्कपूर्ण विरोध, कर्मकांडों की जगह ज्ञान और नैतिक आचरण पर जोर। धर्म एक व्यक्तिगत, तार्किक अनुभूति है।

डिजिटल मंचों पर प्रतिनिधित्व: यूट्यूब पर हज़ारों 'भक्ति चैनल्स' हैं जहाँ मूर्तियों के सामने भजन-कीर्तन का live प्रसारण होता है। सोशल मीडिया पर धार्मिक प्रतीकों का भरपूर प्रयोग, धार्मिक गुरुओं का 'इन्फ्लुएंसर' की तरह प्रचार, और अक्सर दूसरे धर्मों के प्रति विषैली टिप्पणियाँ देखने को मिलती हैं। 'डिजिटल दर्शन' (मंदिर के लाइव दर्शन) एक नया चलन है।

विश्लेषण: यहाँ आर्य समाज के दृष्टिकोण से एक गहरा विरोधाभास दिखाई देता है। एक ओर, तकनीक ने धार्मिक ज्ञान (वेद, उपनिषद) को सर्वसुलभ बनाया है, जो आर्य समाज के शिक्षा प्रसार के लक्ष्य के अनुकूल है। दूसरी ओर, डिजिटल माध्यम ने मूर्तिपूजा और बाह्याडंबर को और भी विस्तार दिया है। 'लाइक' और 'शेयर' करना एक नए प्रकार का 'डिजिटल कर्मकांड' बन गया है। आर्य समाज इस प्रवृत्ति की कड़ी आलोचना करते हुए धर्म के तार्किक व नैतिक सार पर वापस लौटने का आह्वान करेगा। साथ ही, सोशल मीडिया पर धार्मिक घृणा फैलाना आर्य समाज के सार्वभौमिक एकेश्वरवाद और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (पूरी पृथ्वी एक परिवार है) के विचार के सर्वथा विपरीत है।

4.3 जाति एवं समानता वर्ण बनाम डिजिटल जातिवाद

आर्य समाज का दृष्टिकोण: जन्म पर आधारित जाति का खंडन। गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर वर्ण की व्यवस्था। सभी को वेद पढ़ने और यज्ञ करने का अधिकार। शूद्रों की शिक्षा पर बल।

डिजिटल मंचों पर प्रतिनिधित्व: डिजिटल स्पेस जाति-आधारित भेदभाव से मुक्ति का एक अवसर प्रदान करता है (अनामिका/उपनाम का प्रयोग)। किंतु, सोशल मीडिया पर जातिगत गाली-गलौज, दलित-विरोधी मीम्स, और जाति-आधारित ऑनलाइन कम्युनिटीज़ भी सक्रिय हैं। दलित-बहुजन आंदोलनों ने ट्विटर, यूट्यूब को अपनी आवाज़ उठाने का मंच बनाया है।

विश्लेषण: जाति के खिलाफ डिजिटल मुहिम आर्य समाज के सामाजिक समानता के सिद्धांत के अनुरूप है। डिजिटल माध्यमों ने वंचित समूहों को एक स्वर मिलने का अवसर दिया है, जो एक प्रकार की डिजिटल शुद्धि (सामाजिक शुद्धि) है। हालाँकि, आर्य समाज का 'गुण-कर्म' आधारित वर्ण सिद्धांत भी आज की अवधारणा से जुड़ सकता है, जिसकी आलोचना होती है कि यह सामाजिक-आर्थिक असमानता को नज़रअंदाज़ करता है। आर्य समाज की दृष्टि से, डिजिटल मंचों को जाति के नाम पर फूट डालने के बजाय, व्यक्ति के चरित्र और योग्यता को केंद्र में रखने वाली संस्कृति को बढ़ावा देना चाहिए।

4.4 नैतिकता, सत्य एवं डिजिटल विश्वसनीयता

आर्य समाज का दृष्टिकोण: 'सत्यं वद' (सत्य बोलो) एक मूल मंत्र है। झूठ, छल-कपट का त्याग। जीवन में सदाचार।

डिजिटल मंचों पर प्रतिनिधित्व: फेक न्यूज़, डीपफेक वीडियो, प्रोपेगैंडा का बोलबाला। वायरल होने के लिए सत्यता की परवाह न करना। ट्रोलिंग और अनाप-शनाप भाषा का प्रयोग।

विश्लेषण: यह आर्य समाज के नैतिक ढाँचे के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। डिजिटल स्पेस अक्सर 'असत्य' और 'अशुद्ध' सूचना से भरा पड़ा है। आर्य समाज 'शुद्धि' के सिद्धांत को डिजिटल सूचना पर लागू करने पर जोर

देगायानी तथ्यों की जाँच (Fact-checking), विवेकपूर्ण साझाकरण, और गलत सूचना फैलाने से परहेज। एक आदर्श डिजिटल नागरिक वही होगा जो आर्य समाज के 'सत्यनिष्ठ' व्यक्ति के आदर्श पर चले।

4.5 उपभोक्तावाद आध्यात्मिकता बनाम भौतिकवाद

आर्य समाज का दृष्टिकोण: जीवन का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है, जिसके लिए संयम, तप और ईश्वर-भक्ति आवश्यक है। भोग-विलास में फँसना अज्ञान का चिह्न है। समृद्धि को बुरा नहीं माना, किंतु उसे नैतिक साधनों से और दान-पुण्य में उपयोग करने पर बल दिया।

डिजिटल मंचों पर प्रतिनिधित्व: इंस्टाग्राम और यूट्यूब 'लाइफस्टाइल इन्फ्लुएंसर्स' से भरे पड़े हैं, जो महँगी कारें, विदेश यात्राएँ, डिज़ाइनर कपड़े दिखाकर 'सफलता' की परिभाषा गढ़ रहे हैं। ओटीटी शो अक्सर उच्च-मध्यम वर्ग की भौतिकवादी चिंताओं को दर्शाते हैं।

विश्लेषण: आर्य समाज की दृष्टि से, यह नैतिक पतन और आध्यात्मिक दरिद्रता का सूचक है। डिजिटल मंच 'अशुद्ध' इच्छाओं को बढ़ावा दे रहे हैं। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का अर्थ भौतिक समृद्धि नहीं, बल्कि नैतिक और बौद्धिक उत्कर्ष है। आर्य समाज डिजिटल माध्यमों से आह्वान करेगा कि वे सादगी, संतोष और परोपकार के मूल्यों का प्रचार करें, न कि उपभोग की अंतहीन लालसा को।

5: चुनौतियाँ, अवसर एवं निष्कर्ष

5.1 समग्र चुनौतियाँ

गहराता ध्रुवीकरण: डिजिटल मंच 'एकालाप' (Echo Chambers) बना रहे हैं, जहाँ लोग केवल अपने विचारों की पुष्टि करने वाली सामग्री ही देखते हैं। यह आर्य समाज के सार्वभौमिक तर्क एवं विवेक के आदर्श के विरुद्ध है।

सतहीपन का संस्कृति: ट्वीट्स, रील्स, शॉर्ट्स के युग में गहन चिंतन और विमर्श का अभाव। आर्य समाज जिस गंभीर अध्ययन और शास्त्रार्थ पर जोर देता था, उसके लिए यह वातावरण प्रतिकूल है।

नैतिक सापेक्षवाद: 'सबकी अपनी सच्चाई' के नाम पर स्थाई नैतिक मूल्यों का ह्रास। आर्य समाज निरपेक्ष सत्य और नैतिकता में विश्वास रखता था।

व्यावसायिक दबाव: मीडिया का उद्देश्य ज्ञान देना न रहकर, engagement और विज्ञापन राजस्व बढ़ाना रह गया है। इससे sensation और विवाद को बढ़ावा मिलता है।

5.2 संभावित अवसर

वैदिक ज्ञान का विश्वव्यापी प्रसार: डिजिटल माध्यमों के जरिए वेद, उपनिषद और आर्य समाज के साहित्य को पूरी दुनिया में आसानी से पहुँचाया जा सकता है। यह 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का साकार रूप हो सकता है।

तर्कपूर्ण धार्मिक विमर्श का मंच: सोशल मीडिया पर बहसों के माध्यम से धर्म के तार्किक पक्ष को आम लोगों तक पहुँचाया जा सकता है, जो आर्य समाज की मूल भावना है।

सामाजिक सुधार के नए अभियान: डिजिटल मीडिया का उपयोग अंधविश्वास, जातिगत भेदभाव, नशाखोरी आदि के खिलाफ जागरूकता फैलाने में किया जा सकता हैयह आधुनिक 'शुद्धि' आंदोलन होगा।

युवाओं तक पहुँच: आर्य समाज के विचारों को आधुनिक, डिजिटल-अनुकूल रूप में प्रस्तुत करके युवा पीढ़ी को प्रेरित किया जा सकता है।

निष्कर्ष

हिन्दी जनसंचार मंचों के माध्यम से उभरते नैतिक-सांस्कृतिक परिवर्तन एक जटिल एवं द्वंद्वात्मक चित्र प्रस्तुत करते हैं। एक ओर, ये मंच प्रगतिशील सामाजिक परिवर्तन, वंचितों को आवाज़ और धार्मिक जिज्ञासा को संतुष्ट करने का अभूतपूर्व अवसर दे रहे हैं, जो आर्य समाज के अनेक आदर्शोंस्त्री शिक्षा, सामाजिक समानता, ज्ञान का प्रसारसे सहमति रखता है। दूसरी ओर, ये ही मंच नई प्रकार की रूढ़ियों (डिजिटल कर्मकांड), नैतिक सापेक्षवाद, भौतिकवाद की अंधी दौड़ और सामाजिक विखंडन को भी बढ़ावा दे रहे हैं, जो आर्य समाज के मूलभूत सिद्धांतोंतर्क, शुद्धि, सार्वभौमिक नैतिकता और आध्यात्मिक उन्नतिके प्रतिकूल है। आर्य समाज का दर्शन इस विश्लेषण में केवल एक नैतिक पैमाना ही नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक प्रकाशस्तंभ के रूप में कार्य करता है। यह हमें याद दिलाता है कि तकनीक स्वयं न तो अच्छी है और न बुरी; यह उस मानवीय नैतिक चेतना पर निर्भर करता है जिसके साथ हम उसका उपयोग करते हैं। डिजिटल युग में 'आर्य' (श्रेष्ठ) बनने का अर्थ होगा: सूचना के प्रति सजग रहना (शुद्धि), तर्क एवं विवेक को केंद्र में रखना, सत्य और अहिंसा का डिजिटल आचरण में पालन करना, भौतिकवाद के मोह से मुक्त रहना, और सभी मनुष्यों की गरिमा एवं समानता में विश्वास रखना। हिन्दी जनसंचार मंचों को, यदि उन्हें वास्तव में समाज का मार्गदर्शन करना है, तो आर्य समाज द्वारा प्रस्तुत इसी संतुलित, तर्कपूर्ण और मानवतावादी नैतिक-सांस्कृतिक दृष्टि को आत्मसात करना होगा। केवल तभी डिजिटल क्रांति एक सच्चे सांस्कृतिक पुनर्जागरण का माध्यम बन सकेगी, जिसका स्वप्न स्वामी दयानंद सरस्वती ने देखा था।

ग्रंथ-सूची

- सरस्वती, दयानंद. (1875). सत्यार्थ प्रकाश. आर्य समाज प्रकाशन.
- जोन्स, के. डब्ल्यू. (2006). आर्य समाज: भारत में एक सुधार आंदोलन का अध्ययन. मनोहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स.
- हॉल, एस., होबसन, डी., लोव, ए., विलिस, पी. (संपा.). (2017). संस्कृति, मीडिया, भाषा: सांस्कृतिक अध्ययन पर कार्य. रूटलेज.
- कास्तेल्स, एम. (2010). नेटवर्क समाज का उदय. विली-ब्लैकवेल.
- मेहता, एन., और कपूर, जे. (संपा.). (2021). डिजिटल भारत: नई मीडिया संस्कृति और सामाजिक परिवर्तन. सागर पब्लिकेशन.
- नेटफ्लिक्स इंडिया. (2023). भारत में मूल सामग्री: एक रिपोर्ट.
- द वायर हिंदी. (2022, दिसंबर 15). हिंदी ओटीटी सामग्री में सामाजिक विमर्श: एक सामग्री विश्लेषण.